8

आर्थर सेसिल पीगू
[ARTHER CECIL PIGOU]

आर्थर सेसिल पीगू : जीवन परिचय
(ARTHER CECIL PIGOU : LIFE HISTORY)

सुप्रसिद्ध नव-परम्परावादी अर्थशास्त्री तथा मार्शल के शिष्य ए. सी. पीगू का जन्म सन् 1877 में इंग्लैण्ड में हुआ था। उनकी शिक्षा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हुई। वह कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर तथा मार्शल की मृत्यु के पश्चात् सन् 1908 ई. से लेकर 1943 ई. तक अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्यरत रहे। इनकी मृत्यु 1959 ई. में हुई थी।

उन्होंने मार्शल की परम्परा को ही आगे बढ़ाया है और उनके कई विचारों को संशोधित भी किया है। मार्शल के पश्चात् नव प्रतिष्ठित विचारधारा का नेतृत्व पीगू ने ही किया था। मार्शल और पीगू के नाम बहुधा एक साथ ही लिखे जाते हैं। यहां तक कि जब कीन्स ने भी प्रतिष्ठित सिद्धान्तों की आलोचना की है तब उनका तात्पर्य मार्शल और पीगू के विचारों से ही था।

वैसे तो पीगू को मार्शल की परम्परा का ही अर्थशास्त्री कहा जाता है, परन्तु कुछ बातों में मार्शल से वे बहुत भिन्न हैं। पीगू का दृष्टिकोण मार्शल की अपेक्षा अधिक आदर्शवादी है, परन्तु साथ ही उन्होंने मार्शल की अपेक्षा अधिक गणित का प्रयोग किया है। वे कई समितियों के सदस्य रहे थे। वे प्रभावशाली वक्ता और लेखक थे। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में इनके महत्व को केवल कीन्स ने ही चुनौती दी थी। दोनों के मतभेद इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएं हैं। पीगू पर बेन्थम, मिल, मार्शल, सिजविक तथा एजवर्थ का प्रभाव है।

पीगू के आर्थिक विचार
(ECONOMIC THOUGHT OF PIGOU)

पीगू के प्रधान विचारों को हम संक्षेप में इस प्रकार रख सकते हैं :

आर्थिक कल्याण (Economic Welfare)

यह पीगू के सम्पूर्ण विचारों का केन्द्रबिन्दु है। इनकी एक पुस्तक 1920 में '**सम्पत्ति और कल्याण**' (*Wealth and Welfare*) के नाम से प्रकाशित हुई थी। 1920 में वही संशोधित रूप में '**कल्याण का अर्थशास्त्र**' (*The Economics of Welfare*) के नाम से निकली। इसमें उन्होंने आर्थिक कल्याण का अर्थ, उसके घटक (Factors) आदि का विस्तृत वर्णन किया है।

आर्थिक कल्याण पूरे सामाजिक कल्याण का ही एक महत्वपूर्ण भाग है। उनके अनुसार "आर्थिक कल्याण सामाजिक कल्याण का वह भाग है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मुद्रा के मापदण्ड के अन्तर्गत आ सके।"

मुद्रा के द्वारा आर्थिक कल्याण जब नापा जाता है तो वह राष्ट्रीय आय (National Dividend) कहलाती है। पीगू ने दोनों में अन्तर भी किया है, परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से दोनों को एक ही माना है। यदि अन्य परिस्थितियां समान रहें यानी वितरण आदि की व्यवस्था पर कोई बुरा प्रभाव न पड़े तो राष्ट्रीय आय के कम होने से आर्थिक कल्याण की वृद्धि होती है और राष्ट्रीय आय के कम होने से आर्थिक कल्याण कम होता है।

कल्याण (Welfare) एक मानसिक स्थिति है, परन्तु आर्थिक कल्याण जब राष्ट्रीय आय के रूप में आता है तो एक वस्तुगत (Objective) रूप ग्रहण करता है और उसकी माप भी की जा सकती है। राष्ट्रीय आय तीन प्रकार से आर्थिक कल्याण को प्रभावित करती है :

Scanned by PDF Scanner

1. राष्ट्रीय आय की मात्रा,
2. राष्ट्रीय आय का वितरण,
3. राष्ट्रीय आय की स्थिरता।

पीगू का कथन है कि अर्थशास्त्र का प्रधान उद्देश्य इसी आर्थिक कल्याण को बढ़ाने वाले तरीके ढूंढ़ना है। सरकार को भी इसी प्रकार की विधियां निकालनी चाहिए कि आर्थिक कल्याण अधिकतम हो सके। उचित करारोपण इसमें बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। यदि धन का न्यायपूर्ण वितरण हो तो भी आर्थिक कल्याण की वृद्धि होती है।

पीगू ने आर्थिक कल्याण की वृद्धि में व्यावहारिक सुझाव भी दिये हैं। उनका कथन है कि सरकार को उन उद्योगों को अपने नियन्त्रण में ले लेना चाहिए जिनमें उत्पत्ति वृद्धि के नियम लागू हो रहे हों। जिनमें उत्पत्ति का ह्रास रहा हो उनको स्पर्द्धा के बाजार में मुक्त छोड़ देना चाहिए।

पीगू के अनुसार कल्याण इस बात पर निर्भर करता है कि उत्पत्ति के साधनों का उत्पादन और उपभोग में कैसे उपयोग होता है।

अर्थशास्त्र का क्षेत्र एवं उद्देश्य

पीगू के अनुसार सम्पूर्ण विज्ञानों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :

एक वर्ग में प्रकाशदायक विज्ञान (Light bearing sciences) आते हैं जिनका उद्देश्य हमें ज्ञान देना और जिज्ञासाओं को शान्त करना होता है। दूसरा वर्ग फलदायक विज्ञानों (Fruit bearing sciences) का है। इन विज्ञानों का उद्देश्य मानव की कठिनाइयों और समस्याओं को दूर करना है। दर्शनशास्त्र प्रथम श्रेणी का विज्ञान है और चिकित्साशास्त्र और अर्थशास्त्र दूसरी श्रेणी के शास्त्र हैं।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि अर्थशास्त्र का एक उद्देश्य है मनुष्य की आर्थिक समस्याओं का हल ढूंढ़ना। बिना विज्ञान के जैसे चिकित्सा नहीं हो सकती अर्थशास्त्र के बिना आर्थिक कष्ट भी दूर नहीं किये जा सकते, परन्तु यह कहना कि कुछ विज्ञान केवल जिज्ञासा शान्ति के लिए होते हैं, सही नहीं है। ज्ञान मात्र मनुष्य के कष्टों को दूर करने के लिए होता है। भगवान बुद्ध ने सत्य का इसीलिए अन्वेषण किया था कि मनुष्य के दुःख से वे दुःखी थे। दर्शन का सत्य भी मनुष्य की पीड़ा निवारण के लिए ही होता है भले ही वह पीड़ा दूसरे प्रकार की हो मनुष्य के कष्ट केवल दैहिक और भौतिक नहीं होते।

पीगू ने इस प्रकार अर्थशास्त्र को मनुष्य के आर्थिक कल्याण का एक साधन माना है। इस उपयोगितावादी दृष्टिकोण के कारण ही उनको कल्याणवादी अर्थशास्त्र का प्रमुख विचारक माना जाता है।

परन्तु इसका अर्थ यह नहीं समझना चाहिए कि पीगू ने अर्थशास्त्र के विज्ञान पक्ष की उपेक्षा की है। उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि अर्थशास्त्र कला नहीं विज्ञान ही है, परन्तु यह एक ऐसा विज्ञान है जो कला का आधार होना चाहिए।

पूंजीवाद और समाजवाद सम्बन्धी विचार

पीगू ने पूंजीवाद और समाजवाद की उत्कृष्ट तुलना की है। यद्यपि मूल रूप से वे मुक्त अर्थव्यवस्था के समर्थक हैं, परन्तु कई मामलों में उन्होंने सरकारी नियन्त्रण को आवश्यक बताया है। उन्होंने कई स्थलों पर समाजवादी अर्थव्यवस्था को पूंजीवादी अर्थव्यवस्था से श्रेष्ठ भी बताया है। समाजवादी अर्थव्यवस्था में बेकारी समाप्त हो सकती है, उत्पादन बढ़ सकता है। वे पूंजीवाद में संशोधन चाहते थे और इस कार्य के लिए क्रमशः सुधार के पक्षपाती थे।

व्यापार चक्र का सिद्धान्त

पीगू का व्यापार चक्र का सिद्धान्त मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त (Psychological Theory) के नाम से विख्यात है। व्यापार चक्र पर वैसे तो कई बातों का प्रभाव पड़ता है; जैसे आविष्कार, फसलों का उत्पादन, लोगों की रुचि और आवश्यकता में परिवर्तन होना, परन्तु मुख्य कारण उद्योगपतियों द्वारा आशावादी या निराशावादी दृष्टिकोण अपनाना होता है। तात्पर्य यह है कि मन्दी का एक मनोविज्ञान होता है जो पूरे उद्योग तथा अर्थव्यवस्था में फैल जाता है। निराशा के इस वातावरण में विकास की क्रियाएं बन्द हो जाती हैं और मन्दी तीव्र वेग से फैलने लगती है।

Scanned by PDF Scanner

इसमें सन्देह नहीं कि निराशा का वातावरण मन्दी का एक लक्षण है, परन्तु स्वयं मन्दी से उत्पन्न होता है मन्दी को प्रारम्भ नहीं करता। मन्दी के कुछ ठोस भौतिक कारण होते हैं; जैसे अति उत्पादन मूल्यों का पतन आदि। पीगू का सिद्धान्त केवल एक पक्ष को ही प्रस्तुत करता है।

रोजगार का सिद्धान्त

पीगू ने रोजगार के प्रतिष्ठित सिद्धान्त को संशोधित किया है और उसे सही बताया है। रोजगार का प्रतिष्ठित सिद्धान्त जे. बी. से (J. B. Say) के नियम पर आधारित है जिसके अनुसार 'पूर्ति स्वयं अपनी मांग पैदा करती है' अर्थात् किसी उद्योग में मुक्त अवस्था में अति-उत्पादन तथा बेकारी नहीं होनी चाहिए। यदि किसी कारण वह उत्पन्न हो तो लागत खासतौर से मजदूरी कम करने से वह बेकारी दूर हो सकती है। मजदूरी कम होने से लागत और मूल्य कम होंगे—अतः मांग बढ़ेगी और अति-उत्पादन से उत्पन्न होने वाली बेकारी दूर हो जायगी। कीन्स ने इस विचार को असत्य बताया है और कहा कि मजदूरी घटाने से और ज्यादा बेकारी फैलेगी क्योंकि इससे मजदूरों की क्रय क्षमता कम होगी और देश की समर्थ मांग घटेगी और उत्पादन कम करना पड़ेगा, बेकारी बढ़ेगी।

मुद्रा का सिद्धान्त

पीगू का एक महत्वपूर्ण योगदान उनका मुद्रा मात्रा सिद्धान्त (Quantity Theory of Money) का संशोधन है। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के कई आचार्यों ने इस सिद्धान्त में अपने संशोधन किये हैं जिनको सामूहिक रूप से कैम्ब्रिज समीकरण कहा जाता है। इनमें पीगू का ही समीकरण सबसे विख्यात है जो इस प्रकार है :

$$P = \frac{K R}{M} \{ C + h (1 - C)\}$$

इस समीकरण में P का अर्थ मुद्रा की क्रयशक्ति है, K का अर्थ आय का वह अनुपात है, जो समाज मुद्रा के रूप में रखना चाहता है। R समाज की वास्तविक आय है, जो वस्तु और सेवाओं के रूप में होती है। M का अर्थ मुद्रा की मात्रा है।

संक्षेप में इसे इस प्रकार भी लिखा जाता है :

$$P = \frac{K R}{M}$$

जब P का अर्थ मुद्रा की क्रयशक्ति है।

अथवा $$P = \frac{M}{KR}$$

जब P का अर्थ मूल्य स्तर है।

इस समीकरण में K ही प्रधान तत्व है। इसका अर्थ है समाज में मुद्रा की मांग। यह फिशर के मुद्रा के वेग का विपरीत तत्व है।

श्रम सम्बन्धी विचार

पीगू ने श्रम की समस्या पर विस्तृत चिन्तन किया है और द्वितीय महायुद्ध के पूर्व उनको श्रम का विशेषज्ञ माना जाता था। बाद में परिस्थितियों में अन्तर आया और उनके सिद्धान्त श्रम की समस्याओं के लिए उपयुक्त नहीं पाये गये। उनके ग्रन्थ (Economics of Welfare) में बहुत से पृष्ठों में श्रम के कई प्रश्नों पर विचार किया गया है; जैसे कार्य के घण्टे, समय के अनुसार मजदूरी, न्यूनतम मजदूरी का प्रश्न, अल्पकालीन बेकारी की समस्या, औद्योगिक विवाद और उनके सुलझाने की विधियां आदि।

इन प्रश्नों के हल करने में पीगू ने एक सिद्धान्त का उपयोग किया है। जिस कार्य से देश के आर्थिक कल्याण की वृद्धि होती हो वह कार्य उचित है और जिससे आर्थिक कल्याण अर्थात् राष्ट्रीय लाभांश में कमी आती हो वह कार्य अनुचित है। उदाहरण के लिए, यदि कार्य के घण्टे कम करने से देश का उत्पादन घटता है तो कार्य के घण्टे कम करना उचित नहीं है। यही बात औद्योगिक विवाद इत्यादि के विषय में भी कही जा सकती है, परन्तु यह दृष्टिकोण दोषपूर्ण है। यदि श्रम के शोषण में राष्ट्रीय लाभांश बढ़ रहा हो तो क्या शोषण उचित कहा जा सकता है? पीगू का उद्देश्य कल्याणकारी होते हुए भी विशुद्ध आर्थिक हो गया है—कम से कम श्रम के विषय में यह बात निर्विवाद रूप से कही जा सकती है।

Scanned by PDF Scanner

पीगू का मूल्यांकन

मार्शल की परम्परा में पीगू का स्थान सर्वोपरि है। कल्याणवादी अर्थशास्त्र वस्तुतः नव-प्रतिष्ठितवाद की एक शाखा ही है और इसकी प्रेरणा मार्शल से भी प्राप्त हुई, परन्तु कल्याण को अर्थशास्त्र का केन्द्र बिन्दु बनाया पीगू ने। इसी कारण इसे एक अलग विचारधारा कहना उचित ही है। उन्होंने अर्थशास्त्र को एक नवीन दिशा दी। उनके विचार शक्तिशाली एवं महत्वपूर्ण हैं और इतिहास में उनका स्थान सुरक्षित है।

परन्तु यह भी मानना पड़ेगा कि अर्थशास्त्र के अत्यधिक आदर्शवादी होने से उसका वैज्ञानिक पक्ष दुर्बल हुआ है। पीगू के अर्थशास्त्र में कल्याणवाद हावी है। एक विज्ञान के लिए तटस्थ विश्लेषण जरूरी होता है जैसा कि रौबिन्सन ने कभी कहा था। यह विश्लेषण इसके विकास के लिए आवश्यक होता है। पीगू में इसकी कमी खटकती है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पीगू के प्रमुख आर्थिक विचारों का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।
2. पीगू के आर्थिक कल्याण सम्बन्धी विचार का विवेचन कीजिए।
3. पीगू के रोजगार सिद्धान्त का मूल्यांकन कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कल्याणवादी अर्थशास्त्र के सम्बन्ध में पीगू का दृष्टिकोण बताइए।
2. पीगू का पूंजीवाद तथा समाजवाद सम्बन्धी विचार क्या है?
3. पीगू का मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त क्या है?

बहुविकल्पीय प्रश्न

निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिए :

1. 1920 में प्रकाशित '*The Economics of Welfare*' के लेखक थे :
   (A) मार्शल (B) पीगू
   (C) एजवर्थ (D) जे. आर. हिक्स
2. पीगू ने बेरोजगारी दूर करने के लिए सुझाव दिया था :
   (A) वर्तमान मजदूरी की दरों में कटौती करना (B) मजदूरी की दरों में वृद्धि करना
   (C) सरकार द्वारा सार्वजनिक निवेश में वृद्धि करना (D) इनमें से कोई नहीं
3. "आर्थिक कल्याण, सामाजिक कल्याण का वह भाग है, जिसे मुद्रा के मापदण्ड से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से सम्बन्धित किया जा सकता है।" यह कथन किसका है?
   (A) पैरेटो का (B) पीगू का
   (C) मार्शल का (D) हिक्स का
4. ए. सी. पीगू का जन्म कब हुआ था?
   (A) 1860 (B) 1870
   (C) 1877 (D) 1920

[उत्तर : 1. (B), 2. (A), 3. (B), 4. (C)]

Scanned by PDF Scanner